इण्डियन
थिऑसफिस्ट

जुलाई 2023 खण्ड 121 अंक 7

विषयवस्तु

एक पग आगे 5—6
प्रदीप एच. गोहिल

अध्ययन पर कुछ विचार 7—10
टिम बॉयड

आत्मा प्रत्येक वस्तु में और प्रत्येक वस्तु आत्मा में दृश्य 11—18
दर्शन कुमार झा

बन्धुत्व को एक वास्तविकता बनाना 19—24
कितिका गोयल

समाचार और टिप्पणियां 25—34

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक ष्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोभिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली चि या है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृभिट में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच. गोहिल

एक पग आगे

थिऑसफी कहती है कि एक थिऑसफिस्ट की प्रवृत्ति एक शिक्षार्थी की होनी चाहिये। अपने से सदा पूछना चाहिये, ''इस व्यक्ति के पास या इन परिस्थितियों में हमारे सीखने लायक क्या है? इस समस्या से हमें क्या सीखना है? यदि हम इस वस्तु को इस दृष्टिकोण से देखें तो हम इसमें इतनी रुचि लेने लगेंगे कि हमारे पास किसी के बारे में अनुमान लगानें और उन पर दोष लगाने का समय ही नहीं होगा और हमारा जीवन एक प्रज्ञान का जीवन बनना प्रारम्भ हो जायेगा, जो थिऑसफिकल जीवन है।''

थिऑसफी 'कर्म' के सिद्धांत की बात करती है। सम्भवतः थिऑसफी के इस भाग के बारे में सबसे अधिक भ्रान्ति है – शायद कोई अन्य वस्तु इतनी भयावह नहीं है जितना कि कर्म के नियम का सीमित ज्ञान। दुर्भाग्यवश, हम में से अधिकांश लोग इसका कुछ बहुत ज्ञान ले कर बैठ गये हैं। हम याद रखें कि कर्म कैसे बनते हैं, और अनुमान लगायें कि हम क्या जानते हैं, और उससे नहीं जो हम कल्पना करते हैं। डा0 ऐनी बेसैन्ट इसकी बहुत अच्छी तरह से व्याख्या करती हैं। वे कहती हैं, ''लोग समझते हैं कि कर्म एक ऐसा पाषाण खण्ड है जो जन्म के समय ही मनुष्य के सिर पर पटक दिया गया है, जिसे बाद में कोई कुछ नहीं कर सकता है। कभी कभी ऐसा होता है, किन्तु अधिकांश प्रकरणों में जो कर्म हम प्रतिदिन बनाते हैं उनसे भूत काल के कर्मों का संशोधन होता रहता है। यह लगातार चलने वाली रचना है और ऐसा कुछ नहीं है जो आपकी प्रतीक्षा में कहीं विश्राम कर रही है। यह आप के प्र पर लटक रही तलवार नहीं है जो किसी भी क्षण आपके प्र पर गिर सकती है। इसे समझने की प्रयोगिक विधि यह है कि कर्म नियम को याद करें; विचार चरित्र बनाते हैं, कामनायें अवसर लाती हैं, और क्रियायें पर्यावरण बनाती हैं। जब आप ध्यान कर रहे हों तो किसी एक दिन को पीछे मुड़ कर देखें तो आप पायेंगे कि आपके विचार मिश्रित प्रकार के हैं, कुछ उपयोगी और कुछ दुष्ट हैं। यदि आप इनका औसत निकालना चाहो तो इनके संयुक्त परिणाम निर्धारित कर पाना बहुत कठिन है। इसी प्रकार कामनाओं की बात है, दिन के एक भाग में आप महान कामनायें करते हैं और दूसरे भाग में बुरी कामनायें करते हैं। एक दिन का अध्ययन तुम्हें यह संकेत कर देगा कि तुम दिन भर में अनेक प्रकार के विचार उत्पन्न करते हो। और यह कह पाना अत्यंत कठिन है कि संयुक्त परिणाम अच्छे के लिये है या बुरे के लिये। अब यही विचार

अपनी पिछले जीवन के बारे में करें तो आप इस धारणा से मुक्त हो जायेंगे कि कर्म आप पर भार बने हुये हैं जो तुम्हें बाहर की ओर खिसका रहे हैं।

यदि हम जीवन को एक विस्त्रित दृष्टिकोण से देखें तो जीवन महान हो जाता है। वस्तुओं के बाहरी रूप से अंधे न होकर, जब हम वस्तुओं को जैसी वे हैं वैसी ही देखें तो हमारे जीवन छोटे नहीं बहुत महान हो जायेंगे। महान जीवन सुखी जीवन होता है और वह जिसके आदर्श महान होते हैं, वे स्वयं महान होते हैं। यदि हम महान कार्य न कर सकें तो हमें छोटे कार्य पूर्णता से करना चाहिये। क्योंकि पूर्णता वस्तु के सारे आयामों की पूर्णता होती है, उसके आकार में बड़ा होना नहीं। आत्मा के दृष्टिकोण से कोई कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता है। आत्मा की दृष्टि में एक मां के कार्य से, जो अपने रोते हुये बच्चे की देख भाल करती है, एक राजा का कार्य अधिक महान नहीं होता है। प्रत्येक आवश्यक है और वह दैवी गतिविधियों का अंग है।

थिऑसफिकल सोसाइटी के तीन उद्देश्यों को जीवन में उतारने के अतिरिक्त, ये कुछ अंतर्निहित पाठ हैं जो उस जीवन में होते हैं जो वास्तविक थिऑसफिकल है। इस प्रकार थिऑसफी एक सहायक हो जाती है, एक बलवती शक्ति बन जाती है और यदि हम थिऑसफिकल जीवन जी सकते हैं, तो हमारा जीवन ही हमें सिखायेगा न कि किसी वक्ता की वाणी। कुछ ही वक्ता और थिऑसफिस्ट ऐसे हैं जो थिऑसफी को जीते हैं, जिनकी वाणी की कुशलता की अपेक्षा उनका जीवन अधिक अच्छी तरह से सिखा सकते हैं। थिऑसफी को दिन प्रतिदिन के जीवन में जीना चाहिये। थिऑसफिकल जीवन जीना हमारे जीवन में एक आगे का पग होगा।

———————————

टिम बॉयड

अध्ययन पर कुछ विचार

एचपी ब्लैवैत्सकी द्वारा लिखे गये एक लघु लेख प्रैक्टिकल अकल्टिज्म में उन्होंने थिऑसफिस्ट और प्रैक्टिकल अकल्ज्म में भेद करने का एक विशेष बिन्दु दिया है। वे लिखती हैं,

> ''थिऑसफिस्ट बनना आसान है। कोई औसत तर्कबुद्धि का व्यक्ति और पराभौतिकता, शुद्ध और निश्वार्थ जीवन में रुचि और जो स्वयं कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा अपने पड़ोसी की सहायता करनें में अधिक रुचि रखता है, जो अपनी खुशियां दूसरों के हित के लिये त्यागने को सदा तैयार रहता है और जो सत्य, अच्छाइयों और प्रज्ञान को उनकी ग्महानताह ही लिये प्रेम करता हो, उनसे जो लाभ मिल सकता हैं उसके लिये नहीं – एक थिऑसफिस्ट है।

इसका वह भाग जिससे मेरा सरोकार है वह यह है, वैसा व्यक्ति बनना 'आसान' है।

एक थिऑसफिस्ट के गुणों की सूची में एक रोचक आयाम यह है कि उसका कोई किसी संगठन का सदस्य होना आवश्यक नहीं है। वे जो इस थिऑसफिकल दृष्टिकोण से आकर्षित होते हैं शीघ्र ही अपने से कुछ प्रश्न करना प्रारम्भ कर देते हैं, जैसे – कहां से मेरा प्रारम्भ हुआ है? मैं क्या अध्ययन कर सकता हूं और मुझे क्या अध्ययन करना चाहिये? जे. कृष्णमूर्ति की लघु पुस्तक *ऐट द फीट ऑफ द मास्टर* में अध्ययन के महत्व पर जोर दिया गया है। किन्तु पहले उसका अध्ययन करो जो तुम्हें 'दूसरों की सहायता करनें में सबसे अधिक सहायता करे'। अतः वह क्या है जो तुम्हें दूसरों की सहायता करनें में सबसे अधिक सहायता करेगा, और उसे हमें कैसे पढ़ना चाहिये और वह साहित्य हमें कहां मिलेगा?

मैं पूरे संसार में यात्रा करता हूं और टीएस और समूहों के सदस्यों से वार्तालाप करता हूं। वे अध्ययन के लिये जिस विषय का चयन करते हैं वह कभी कभी आश्चर्यजनक होता है। क्योंकि कुछ लोगों के लिये अध्ययन पूरी तरह से एचपीबी के लेखन और महात्मा पत्रों पर केन्द्रित होता है। और कुछ लोगों के लिये थिऑसफिकल शिक्षकों की दूसरी लहर – बेसैन्ट, लेडबीटर और कृष्णमूर्ति के अध्ययन में व्यस्त रहते हैं। कुछ अन्य लोग परामानसिक क्षेत्र की समझ और

उसके विकास की ओर केन्द्रित हैं।

विशेषरूप से प्रारम्भ में बुद्धिमानी पूर्वक चयन करना बहुत आवश्यक है। गलत दिशा में प्रारम्भिक कदम हमें उस दिशा से दूर ले जा सकता है जिसकी हमारी प्रारम्भिक मंशा थी। इस अध्ययन का उद्देश्य विचार शक्ति का उत्थान है। जैसे एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ना। चोटी तक चढ़ने के अनेक मार्ग होते हैं। किन्तु जब चोटी पर पहुंच जायेंगे तो नीचे की पूरी भूमि की रूपरेखा और उसका दृश्य हमें एक दृष्टिपात में दिख जायेगा।

हम 'नीचे' शब्द का प्रयोग इसलिये कर रहे हैं कि हमारे पहाड़ी की चोटी के अनुभव की अवधि को ध्यान रखते हुये पृथ्वी जहां हम रहते हैं, जहां हमारे दैनिक जीवन हैं एक आपस में संबन्धित पूर्ण के रूप में साफ साफ देखे जा सकते हैं। इस अनुभव का एक सत्य यह है कि जो उंचाई हम प्राप्त कर चुके होंगे वहां से देर सबेर नीचे आना पड़ेगा। चाहे हम एक भौतिक पहाड़ी पर खड़े हों या कभी कभी ध्यान में होने वाली तन्मयता में हों, अंततः अपनी सामान्य गतिविधिओं में लगने के लिये एक बार फिर हमें भूमि पर आना होगा। चोटी के अनुभव के बाद में हम कल्पना कर सकते हैं कि हम नीचे की अपनी सीमाबद्धतायें जिनसे हम नीचे के जीवनों मे संस्कारित हुये थें, उन्हें छोड़ देंगे, किन्तु ऐसा नहीं कर सकते हैं, हमनें स्पष्टता से देखने का अनुभव प्राप्त कर लिया है और अब अपने को उस स्मृति के आधार पर अपने को निर्देशित करना चाहिये। वह हमारी स्मृति में है और हम जाना हुआ भूल नहीं सकते हैं।

जैक कार्नफील्ड नाम के एक ध्यान शिक्षक हैं जिन्होंने कहा है, ''तंद्रा के बाद डिशेज आती हैं'' चोटी के अनुभव के बाद हम वापस डिशें साफ करते हैं, बच्चों को स्कूल ले जाते हैं, और काम पर जाते हैं। वे सारे कार्य करने होते हैं जो जीवन में होते हैं किन्तु सब कुछ हम अलग तरह से करते हैं। जैसा एक बार ज्वॉय मिल्स ने कहा था, ''तुम दिखते तो वही हो किन्तु देखते वैसे नहीं हो''। हमारी थिऑसफिकल दृष्टिकोण से यह उड़ान अध्ययन, ध्यान और सेवा से विकसित होती है।

अपने को अधिक से अधिक पूर्णतापूर्वक विकसित करने के लिये सम्पूर्ण शिक्षाओं को प्राप्त करना अच्छा है। एचपीबी अपने लेखन में लैम रिम और ''प्रकाशित होने के क्रमिक मार्ग'' के संदर्भ देती हैं। इसे पूरा पैकेज माना जाता है, जिसके कारण कोई अनावरण के किसी स्तर पर क्यों न हो, उसे अपने लिये उपयुक्त शिक्षायें मिल जाती हैं। लैम रिम के मत के अनुसार आध्यात्मिक व्यवहार

में लगे लोगों के तीन भिन्न स्तर होते हैं। वे उन्हें ''तीन दृ य कहते हैं – निम्न, मध्यम और महान''।

छोटा दृश्य उन लोगों से सम्बन्धित है जिनका सरोकार केवल अपने दुखों से रहता है और सदा बार बार अस्तित्व में आने वाले संसार में होती है, जन्म, मृत्यु और पुनः जन्म वाले संसार में। इस छोटे दृश्य में आचरण करने वाले इस जीवन में सुखी रहने और आगे के जन्मों में अपेक्षाकृत अधिक अच्छे जीवन के लिये कार्य करते हैं। सम्भवतः एक ऐसे परिवार में जन्म लेने के लिये जिसमें सम्पत्ति हो और अधिकार हों। या किसी स्वर्ग के लिये जो तिब्बत के बुद्धिज्म से सम्बन्धित हो।

मध्यम स्कोप उन साधकों का होता है, जिन्होंने बार बार होने वाले जन्म के दुखों को देख लिया है। हमारे थिऑसफिकल वांग्मय में हम 'प्रत्येक बुद्धों' के बारे में सुनते हैं। उन्हे कभी कभी 'स्वार्थी बुद्ध' भी कहा जाता है। क्योंकि उनका फोकस और सफलता दुखों से मुक्ति और व्यक्तिगत सफलता में होती है।

उसके बाद महान दृश्य होता है, बोधिसत्व का मार्ग उनके लिये जो दुखी मनुष्य की मुक्ति के लिये मार्ग में चलने के लिये दृढ़ संकल्प करते हैं। बोधिसत्व की प्रतिज्ञा होती है, ''मैं सारे संवेदनशील प्राणियों के हित के लिये प्रकाशित होना चाहता हूं'', और वह थिऑसफिकल दृष्टिकोण से बहुत मेल खाता है।

थिऑसफिकल परंपराओं में गहन शिक्षायें हैं जो हम सब को अनेक स्तरों पर सम्बोधित करती हैं जिसमें हम अपने को पाते हैं। ये अनेक पुस्तकें बहुत कम हो जाती हैं। सूत्रों की तरह वे हमें अपने प्रयोग करने के लिये छोड़ देती हैं।

ऐट द फीट ऑफ द मास्टर जो चार योग्यताओं की चर्चा करती है वे हमें शि यत्व के मार्ग मे प्रवेश की ओर ले जाती हैं – विवेक, निष्कामता, सदाचार और प्रेम। हमारे पास एचपीबी की *द वाइस ऑफ द साइलेंस* है। जो 'थोड़े से लोगों के लिये' समर्पित है जो दूसरे स्तर पर मार्ग को अनावरित करती है, और मेबल कालिंस की *लाइट ऑन द पाथ* है जिसकी अनेक चेतावनियां हैं। पुस्तक का पहला भाग आगे बढ़ने के पहले उन कामनाओं के बारे में बताता है जो हमें त्याग देनी चाहिये। विडम्बना है कि जब कामनायें समाप्त कर ली गयी हों तब पुस्तक हमें दूसरे स्तर पर उन कामनाओं के बारे में बताती है जो हमें करनी हैं।

उनमें से एक कामना है ''वस्तुओं की कामना करो'' किन्तु ये वस्तुयें आन्तरिक प्रकृति की हैं। पुस्तक अपने अंतिम भाग में 'खोजों' के बारे में बताती है, वे खोज कौन सी हैं और वे कहां मिलेंगीं?

अंतिम सूत्र में, कामनायें समाप्त करने और मार्ग की खोज के बाद हमें रुकना बताया जाता है – ''कुछ भी मत करो''। पुस्तक का अंतिम वाक्यांश है, ''झंझावत के बाद फूलों के खिलने की आशा करो''। जब तक जीवन का झंझावत हमें अपनी मूल तक हिला नहीं देता, प्रज्ञान का पुष्प नहीं खिलता है। ये पूरी शिक्षायें हैं जो हमें मार्ग की यात्रा में निर्देशित करती हैं, यदि हम इन सांकेतिक संस्करणों के स्रोतों के साथ संबन्ध बना सकें।

जब मैं बहुत युवा था, हमारे एक शिक्षक थे जो कभी कभी ऐसी बातें बताते थे जो विलक्षण थीं। वे जो कहते थे उनमें से एक बात थी कि प्रज्ञान की शिक्षायें उन लोगों से सुरक्षित हैं जो उनके लिये तैयार नहीं हैं। वे किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण देते थे जो अनेक हीरे लेता है और फर्श पर बिखरा देता है। कमरे में प्रवेश करने वाला व्यक्ति जो हीरे की पहचान करना नहीं जानता है कहेगा, ''आपका घर साफ नहीं है, आप नें पूरी फर्श में बहुत सारे कांच के टुकड़े फैला रखे हैं।'' किन्तु कोई ऐसा व्यक्ति जो हीरे की परख जानता है, वह तुरंत मूल्यवान हीरों को पहचान लेगा जो उसके पैरों के चारो ओर फैले हुये हैं।

जो शिक्षायें हमें दी गयी हैं वे इसी प्रकार की हैं। यह प्रज्ञान की प्रकृति है कि यह इस प्रकार से अभिव्यक्त की गयी है कि हमारा जो भी स्तर है, जितना हमारे अनावरण का स्तर है, उसके उपयुक्त हमें हमारी आवश्यकताओं के अनुसार ज्ञान देंगी। हमारा उत्तरदायित्व है कि हम जागरूक रहें कि वे सीमाहीन हैं। इसलिये जो कौर हम इस क्षण आसानी से पचा पायें उससे संतुष्ट रहना आसान है, किन्तु हमारी भूमिका है उत्तरोत्तर प्र पर उठना, सदैव गहनतर की ओर देखना, अपने अनुभव को गहन करना।

जैसे जैसे जागरूकता का दृश्य हमारे सामने खुलता है, हम निश्चित रूप से पाते हैं कि वही शिक्षायें हमें अलग ढंग से कहने लगती हैं। यह इनका सौन्दर्य है – यह एक कभी न समाप्त होने वाला मार्ग है और हमें प्रत्येक बिन्दु पर अनन्त सहायता मिलती है।

स्सौजन्य से – द थिऑसफिस्ट, जून 2023ह

दर्शन कुमार झा*

आत्मा प्रत्येक वस्तु में और प्रत्येक वस्तु आत्मा में दृश्य**

> ईश्वर को जानने के लिये हमें मनुष्य को जानना है या मनुष्य को जानने के लिये हमे ईश्वर को जानना होगा। विश्व को समझना ईश्वर और मनुष्य दोनों को समझना है; क्योंकि विश्व दैवी विचार की अभिव्यक्ति है और विश्व मनुष्य में परावर्तित होता है।
>
> डा0 ऐनी बेसैन्ट[1]

पहला प्रश्न है कि मनुष्य स्वयं क्या है? वह आत्मा है या अहंकार है?

आत्मा का भान एक सामान्य प्रयोगसिद्ध अनुभव है, फिर भी दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों और रहस्यवादियों जिन्होंनें इसकी खोज का प्रयास किया है, वे समान उपसंहार पर नहीं आये हैं कि 'वास्तव में यह है क्या?'। कुछ इसके अस्तित्व की पुष्टि करते हैं, किन्तु भिन्न भिन्न प्रकार से इसे परिभाषित करते हैं। जैसे डैविड " ूम, एक दार्शनिक[2] और बुद्धिष्ट इसके अलग इकाई के रूप में अस्तित्व को नकारते हैं। " ूम कहते हैं ''हम लोग अवधारणाओं की गठरी से अधिक कुछ नहीं हैं, जो एक के बाद एक अचिन्तनीय तीव्रता से आती हैं।

आत्मा की प्रकृति के बारे में सबसे पहले की खोजें उपनिषदों में मिलती हैं। उदाहरण के लिये आत्मा या पुरुष य्चेतनाह को सारे अनुभवों में अंतर्निहित अस्तित्व का स्थान दिया गया है। हिन्दू ग्रन्थ सामान्य रूप से आत्मा या स्वयं की वैश्विक आत्मा या परब्रह्म से पहचान करते हैं। साथ साथ वे इसे अहंकार या 'मैं' का निर्माण करने वाली आन्तरिक शक्ति से अलग मानते हैं। चि श्चियनिटी तीन स्वयं की पहचान करती है – शरीर, मन और और स्पिरिट या आत्मा।

मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स[3] नें पहचान की है कि एक प्रयोगसिद्ध प्रत्यक्ष 'स्व' है य्जो पदार्थीय, सामाजिक और आध्यात्मिक स्व को अपने में समेटे हैह किन्तु इसके इन आयामों में अंनिर्हित शुद्ध इगो य्या आर्क इगोह है जो एकत्व और आत्मा के अनुभवों की निरंतरता का स्रोत है। ▫ ्यूड[4] दूसरी ओर चैतन्य इगो की कार्यों के अनुसार आईडी य्स्फुरणात्मक संवेगह से अलग पहचान करते हैं। जन्म के समय केवल आई डी कार्य करती है जब कि इगो और सुपर इगो ग्रोथ और अनुभव के आधार पर बाद में स्थापित होने वाले अंतर हैं। कार्ल जंग[5] आत्मा को मानव चेतना का आदिरूप अंतर्निहित ढांचा मानते हैं। इस आदिरूप में इगो य्चैतन्य मनह बाहरी सेल्फ य्द पर्सोनाह छाया य्स्फुरणात्मक संवेगहऔर एनीमस युपुरुषत्व या स्त्रीत्व का आभास करने वालाहसम्मिलित हैं।

+ सदस्य आनन्द लॉज, प्रयागराज, यूपी, ईमेल – datshanjha@gmail.com असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, जगत तारन गर्ल्स पीजी कालेज, इलाहाबाद, प्रयागराज, उ0प्र0, भारत

य यह वक्तव्य भारतीय सेक्शन मुख्यालय, टीएस, वाराणसी में 29 अक्टूबर 2022 को हुये भारतीय सेक्शन के 131 वें अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था। ह

अद्वैत वेदांत[6] के अनुसार आत्मा व्यक्ति की ''वास्तविक स्व'' है या ''सार'' है। यह चैतन्य है, शुद्ध चेतना है यह ''अभिव्यक्ति, स्वयं सिद्ध और स्वयं जागरूक'' और ''किसी प्रकार से ''स्थायी, शाश्वत, परम–पूर्ण या अपरिवर्तनशील'' है। यह ''स्वयं अस्तित्व वाला, जागरूक, असीम, और अद्वैत'' है।

स्व के बारे में थिऑसफिकल दृष्टिकोण हिन्दू दृष्टिकोण के समरूप है। सेवेन प्रिन्सिपिल्स ऑफ मैन में डा0 ऐनी बेसैन्ट[7] कहती हैं कि सच्चा स्व आत्मा है जो अपने को 6 देहों या को ाों से अभिव्यक्त करती है। आध्यात्मिक आत्मा य्बुद्धिह उच्च मनस स्व के बारे में थिऑसफिकल दृष्टिकोण हिन्दू दृष्टिकोण के समरूप है। आध्यात्मिक आत्मा य्बुद्धिह उच्च मनस य्अरूप मनसह निम्न मनस य्रूप मनसह भावनायें य्कामह ईथरिक डबल यलिंग शरीरह और भौतिक शरीर य्स्थूल शरीरह। यह सच्चा स्व या आत्मा बार बार जन्म लेने वाली इगो य्कारण शरीरहऔर व्यक्तित्व या व्यक्तिगत स्व य्नीचे के चार को ाह

जैसा डा0 बेसैन्ट अपने वक्तव्य ''सेल्फ ऐण्ड शीथ्स[8]'' में कहती हैं कि स्व को जाननें और समझने से सारी समस्यायें हल करने योग्य हो जाती हैं, वे जिनका वास्तवीकरण यदि कर लिया जाता है तो सारी कठिनाइयां दूर हो जाती हैं। जो जान लिया जाता है वह हमें परम शांति प्रदान करता है, वह जिसके परे कुछ भी नहीं है, और जिसके जानने से हम सब कुछ जो है और जो हो सकता है, जान जाते हैं।

निम्न स्व को उच्च स्व में घोलना

हम परम रहस्य को सीख लें और परम रहस्य को जानने के बाद संसार के युद्धक्षेत्र में अपने कर्तव्य करें। यह परम सत्य श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया, आध्यात्मिक उद्देश्य से नहीं बल्कि संसार की वास्तविक समस्या को हल करने के लिये। ज्ञानी अर्जुन को नहीं बल्कि योद्धा अर्जुन को।[9] उच्च स्व में निम्न स्व दृश्य है जैसे ही हम अपनी निम्न गुणवत्ता स्वच्छ कर लेते हैं, जैसे – भौतिक,

ईथरिक, आस्ट्रल और मेंटल। हम अपने निम्न स्व की पहचान एक 'व्यक्तित्व' और 'इन्डिजुअलिटी' एक उच्च स्व के रूप में कर सकते हैं। हमारा प्रत्येक कार्य, भावना और विचार हमारे उच्च त्रिभुज में या इन्डिविजुअलिटी में अपना प्रभाव करते हैं। जैसे जैसे हम शुद्ध और परिशोधित होते जाते हैं, हम अपने उच्च स्व में शोषित होते जाते हैं।

हम विश्व के प्रारम्भ में आते हैं, और यह प्रतीत करने का प्रयास करते हैं कि विश्वात्मा क्या है; क्यों कि उच्चात्मा ही विश्व है और विश्वात्मा और मनुष्य की आत्मा एक है। और आत्मा को जानने के बाद हम जान लेते हैं कि जो विश्व की आत्मा है वही मनुष्य की आत्मा है। प्रारम्भ की ओर वापस जाने पर हम अनन्त अंधकार में आते हैं जहां कोई विचार नहीं है, कोई भाषा नहीं है, जहां कुछ भी मानवीय या सीमित नहीं है। इसका कोई नाम नहीं है और कोई शब्द इसका वर्णन नहीं कर सकता है। उसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। जब हमारे ऋषि पीछे की ओर जाते हैं और ब्रह्म तक पहुंचते हैं, जिसका कोई स्रोत नहीं है, जो एक और सब कुछ है, और उसे परब्रह्म के रूप में वर्णित करते हैं। हां सारी बुराई स्तब्ध है, और सारा विचार मृत हो जाता है।[10]

जब हम अंधकार को देखने का प्रयास करते हैं जिसमें कुछ भी नहीं और सब कुछ साथ अस्तित्व में हैं, वहां अंधेरे के माध्यम से एक प्रकाश की झलक मिल सकती है जो रूप हीन है, हम नहीं जानते हैं कि यह कहां से और किस प्रकार आता है, प्रकाश जो असीमित है और उसमें विचार विश्राम कर सकता है और एक वास्तविक प्रकाश सम्भव है जैसा कि मुण्डकोपनिषद[11] का कथन है।

बिना रूप के प्रकाशित ..... बिना बीज, बिना जीवन, बिना मनस

अब प्रश्न यह है कि 'बिना जीवन के' क्या है? बिना मनस के क्या है? वह, जिससे विश्व की प्रत्येक वस्तु प्रारम्भ होती है वह और उसका कुछ भी नहीं है? हां, क्यों कि मन का होने का अर्थ हुआ कि एक से अधिक, और वह एक है; क्योंकि मन के होने का अर्थ है कि कोई है जो सोचता है, और कुछ ऐसा है जिसके बारे में सोचा जाये, और एक और उसमें वह भी लिपटा हुआ है जो सोचा गया हो किन्तु अभी अभिव्यक्त नहीं हुआ है।

1. प्रो0 रचना श्रीवास्तव वसन्त कन्या महाविद्यालय की प्रधानाचार्य हैं, जो थिऑसफिकल सोसाइटी के भारतीय सेक्शन के द्वारा संचालित है और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। दि0 17 फरवरी को अडयार दिवस के उपलक्ष्य में जे. कृष्णमूर्ति को श्रद्धांजलि के रूप में यह लेख ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया था।

मैडम ब्लैवैत्सकी – इस पर चर्चा करते हुये जो सारी चेतना से परे है, उसके द्वारा जो मन से परे है, उसके द्वारा जो विचार से परे है, इसलिये नहीं कि वह किसी प्रकार कम है बल्कि इसलिये कि यह इतना अधिक है, क्यों कि यह अधिक गहन है, विस्तृत है, सब समेटे हुये है। 'सीक्रेट डाक्ट्रीन' में मैडम ब्लैवैत्सकी 'डिवाइन पिमांडर'[12] से उद्धरित करती हैं,

> ''ईश्वर एक मन नहीं है, किन्तु वह मन का कारण है, एक आत्मा नहीं है किन्तु वह है जिसके कारण आत्मा है, कोई प्रकाश नहीं है किन्तु वह है जिसके कारण प्रकाश है''।

डा0 बेसैन्ट[13] इसका इस प्रकार विवेचन करती हैं, ''मनुष्य का मन विचार करता है किन्तु विचार करने के लिये उसके पास भूतकाल की स्मृति होनी चाहिये, उसे वर्तमान की प्रतीति करनी चाहिये और भविष्य की ओर देखना चाहिये। किन्तु ब्रह्म में न भूतकाल है, न वर्तमान है और न भविष्य है, एक शाश्वत अब है, और समय, स्थान और स्थितियों के क्रम की कोई पहचान नहीं है'' सरल शब्दों में, हम कह सकते हैं कि वस्तुपरक आयामों की दयनीय धारणायें व्यक्तिपरक पूर्ण की माप करने के लिये पर्याप्त नहीं हैं जैसे महीन नक्कासी के लिये कुल्हाड़ी। वह उनमें से एक है प्रत्येक वस्तु बनती है, वह ब्रह्म है, विश्वात्मा है, वही ईश्वर है, स्वामी है।

स्व या आत्मा किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है किन्तु दैवी सार है जिसके पास कोई देह नहीं है, कोई रूप नहीं है, जो अचिन्तनीय है, अदृश्य और अविभाज्य है। एचपी ब्लैवैत्सकी[14] के अनुसार ''विश्वात्मा वैश्विक सर्व है, और वह केवल बुद्धि, जो उसका वाहन है, के संबंध से मनुष्य का उच्च स्व हो जाता है''

अब हम मुख्य खोज की ओर मुड़ सकते हैं कि हम कैसे समझ सकते हैं कि परमात्मा प्रत्येक वस्तु में दृष्टिगत है और प्रत्येक वस्तु में परमात्मा?

सीक्रेट डाक्ट्रीन[15] में इसकी इस प्रकार व्याख्या की गयी है कि विश्व दैवी विचार की अभिव्यक्ति है। छान्दोग्य उपनिषद[16] कहता है ''एकोहं बहुष्यामि''।

विश्व का प्रारम्भ है; अंतर समझ पाने यडिफरेंसिऐशनह का प्रारम्भ है; और

यह एक आंतरिक डिफरेंसिएशन है; और बाहरी प्रसार नहीं; यह प्रकृति का परिवर्तन नहीं है, बल्कि स्थिति का परिवर्तन है; यह पदार्थ का बदलाव नहीं है, बल्कि एक ही अंतर में एक भिन्नता है, 'मैं अनेक हो जाप्र ंगा' के कारण।

यह दैवी रूप के अंतर में विश्व की अभिव्यक्ति है। भगवद्गीता[17] के 11 वें अध्याय में श्रीकृष्ण अपने दिव्य रूप में प्रकट हुये या विश्वरूप में पृथ्वी से आकाश तक, सैकड़ों सूर्यों की भांति चमक रहे थे, अर्जुन अपनी दिव्य दृष्टि से सारे देवों को देखते हैं, और जीवित वस्तुओं के सभी स्तरों को उनके शरीर में देख रहे होते हैं। इसलिये ऐसा लिखा है कि विश्वात्मा के लिये प्रत्येक वस्तु प्रिय है – उसके बाहरी रूप के कारण नहीं किन्तु उनके आन्तरिक आत्मा के लिये – न्यूनतम भी और उच्चतम भी, धूल का एक कण या सर्वोच्च देव। हम सर्वोच्च से कुछ भी अलग नहीं कर सकते; यह सब की आत्मा है और सभी में उपस्थित है।

उद्दालक और उसके पुत्र श्वेतकेतु की एक प्रसिद्ध कहानी[18] है जिसनें अपने पुत्र को नमक के पानी में घुले होने का उदाहरण दे कर को समझाया था। उन्होंने नमक लिया और उसे पानी में डाल दिया और अगले दिन उससे नमक को बाहर निकालने को कहा, और पुत्र ने कहा कि मैं उसे नहीं पा सका। तब पिता ने कहा, ''पानी के प्र पर–मध्य–नीचे से उसका स्वाद लो'' लड़के ने कहा, ''यह नमकीन है।'' तब पिता ने अपने पुत्र से कहा कि जैसे नमक पानी में दिखाई नहीं पड़ता है पर पूरे पानी में बराबर रूप से घुला है उसी प्रकार इसी प्रकार ब्रह्म , विश्व के साथ है। उन्होंने अपने पुत्र से कहा, '' हे विश्वकेतु! तुम वह हो'' उसी में तुम्हारा पुल है; तुम आत्मा हो और आत्मा और ब्रह्म एक हैं।

हम कभी कभी आत्मा कहते हैं और ब्रह्म को और सभी की आत्मा को परमात्मा कहते हैं। जब हम किसी व्यक्ति को पुरुष कहते हैं तो हम सभी में व्याप्त आत्मा को पुरुषोत्तम कहते हैं। किन्तु सभी स्थानों में वही एक है, महान और लघु में; कोई अन्तर नहीं है, कोई अलगाव नहीं है, एक शाश्वत अमर और पुरातन आत्मा है, और आत्मा तुम्हारी और मेरी आत्मा है। स्थिति में अंतर हो सकता है, अभिव्यक्ति में अंतर हो सकता है, किन्तु सार और प्रकृति एक और वही है। इसी लिये छान्दोग्योपनिषद में लिखा है कि वह आत्मा पुल है।

आत्मा और परमात्मा के भेद और परमात्मा का अभिव्यक्त विश्व से सम्बन्ध को समझने के लिये अद्वैत वेदान्त के दर्शन की, जो उपनिषदों पर आधारित है, यहां चर्चा करना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं यहां निरालम्बोपनिषद[19] के

एक सूक्त को उद्धरित करना चाहूंगा जिसे अद्वैत वेदांत के दार्शनिक[20] प्रायः उद्धरित करते हैं, ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मै व नापरः''।

ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है ्इसे वास्तविक या अवास्तविक के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता हैह्जीव और ब्रह्म भिन्न नहीं हैं। दर्शन व्याख्या करता है कि ब्रह्म अपनी माया के कारण इस संसार की भांति दिखता है और अन्य सारी वस्तुयें भी ब्रह्म हैं और और आत्मा सत–चित–आनन्द है और ब्रह्म से भिन्न नहीं है। इसका अर्थ है कि सभी अनुभव और वस्तुओं में अंतर्निहित ब्रह्म आधारभूत वास्तविकता है। ब्रह्म की व्याख्या शुद्ध अस्तित्व, शुद्ध चेतना और शुद्ध आनन्द के रूप में की गयी है और चेतना केवल ब्रह्म की सम्पत्ति नहीं है बल्कि इसकी प्रकृति ही है।

हमारे ग्रन्थ कहते हैं ''यथा पिण्डे तथा ब्रह्म ांडे यथा ब्रम्हाण्डे तथा पिण्डे'' इसका अर्थ है ''जैसा व्यक्ति है वैसा ही ब्रह्म ांड है, जैसा ब्रह्म ांड है वैसा ही व्यक्ति है''। 'अनेक उदाहरण दिये गये हैं जो संसार का ब्रह्म से सम्बन्ध दर्शाते हैं। दो प्रसिद्ध उदाहरण हैं घड़े में आकाश और ब्रह्म ाण्ड में आकाश ्वास्तव में दोनों के आकाश या स्पेस में कोई फर्क नहीं है किन्तु घड़े के द्वारा कुछ आकाश संयोग से घेर लिया गया है। यही सम्बन्ध विश्व और ब्रह्म का है।ह्और आत्मा और आत्मा का परावर्तन ्यरावर्तन का ब्रह्म के बाहर कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है क्योंकि संसार की सारी वस्तुओं का अस्तित्व ब्रह्म पर आधारित हैं।ह्अद्वैत वेदान्त[21] के अनुसार अस्तित्व के तीन स्तर होते हैं – अंतिम अस्तित्व ्यरमार्थिक सत्ताह्सांसारिक अस्तित्व ्व्यावहारिक सत्ताह्जिसमें संसार और स्वर्ग का संसार है और मायावी अस्तित्व की सत्ता ्यप्रतिभासिक सत्ताह्। जब हम जानते हैं कि बाद के दो स्तर माया की कृति हैं और किसी सीमा तक भ्रमित करने वाले हैं, हम परमार्थिक सत्ता में पहुंच जाते हैं। और उस स्तर पर हम समझ जाते हैं कि आत्मा और परमात्मा एक हैं दो नहीं। परमात्मा और विश्व दो नहीं हैं। प्रेक्षण जब प्रेक्षक से एकीकृत हो जाता है तो केवल शुद्ध चेतना बचती है। माया की भ्रामक शक्ति के कारण, इसके अतिरिक्त सब मानसिक चित्र हैं। जब मनुष्य विवेक की कला सीख लेता है और स्रोत को देखता है तो प्रत्येक स्थान पर ब्रह्म को देखता है। इसलिये शब्द अद्वैत का प्रयोग यह संकेत करने के लिये किया जाता है कि प्रेक्षक और प्रेक्षण में कोई कोई द्वैत नहीं है। प्रसिद्ध हिन्दी कवि जयशंकर प्रसाद[22] नें बड़ी सुन्दरता से लिखा है, ''नीचे जल था प्र पर हिम था, एक तरल था एक सघन,एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन''

अतः हम एक निष्कर्ष पर आते हैं जो हमारे उपनिषदों में लिखा है, ''अहम् ब्रह्मास्मि'' या मैं ब्रह्म हूं — एक महावाक्य। क्योंकि 'मैं' शुद्ध चेतना के अतिरिक्त कुछ नहीं है, एक दूसरा महावाक्य परावर्तित होता है — ''प्रज्ञानम् ब्रह्म'' अर्थात शुद्ध चेतना ब्रह्म है।

महासागर लहरों में नहीं है, फिर भी लहरें महासागर हैं। वे दोनों एक में ही हैं, अविभाज्य। जब भगवान कृष्ण नें विश्वरूप धारण किया, दृश्य में प्रत्येक वस्तु और अन्य वस्तुयें आपस सम्बन्धित दिखीं। कुछ भी एकात्मा से अलग नहीं है। हमसे बाहर कुछ भी कुछ नहीं है। हमें देश और काल की चेतना से बाहर जाना चाहिये जिसके कारण वस्तुयें और लोग बाहरी लगते हैं। विश्व को उसके भौतिक दृष्टिकोण से समझने के बाद हम दिव्य शब्द को कुछ समझ लें, अपना और सब का सत्य। जितना अधिक हम विश्वात्मा या प्रकृति का अनुमान लगा लेगें उतने ही मुक्त हम हैं।

जीवात्मा या व्यक्तिगत आत्मा अनेक अलग अलग दृश्य शरीरों में एकात्मा या परमात्मा का परावर्तन है। यह चेतना की अलग इकाई नहीं है। दूसरे शब्दों में परमात्मा प्रत्येक वस्तु में दृश्य है और विश्व के शाश्वत ब्रह्म के अनुरूप है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि विश्व दैवी विचार की अभिव्यक्ति है और विश्व मनुष्य में प्रतिबिंबित होता है। दूसरे शब्दों में परमात्मा प्रत्येक वस्तु में दृश्य है और प्रत्येक वस्तु परमात्मा में दृश्य है।

इसलिये हम प्रार्थना करते हैं जैसे कि बृहदारण्यक उपनिषद[23] कहता है, ''असतो मा सद्गमय।। तमसो मा ज्योतिर्गमय ।। मृत्योर्मामृतम गमय ।।''

संदर्भ

1. सेल्फ ऐण्ड शीथ, दि0 25 से 28 दिसम्बर 1894 की अवधि में थिऑसफिकल सोसाइटी की 19 वीं वार्षिकी के अवसर पर डॉ0 ऐनी बेसैंट द्वारा प्रस्तुत किये गये चार वक्तव्य, पृ0 2
2. सेल्फ ऐण्ड शीथ, पृ0 2
3. थिऑसफिकल एन्साइक्लोपीडिया, थिऑसफी वर्ल्ड रिसोर्स सेन्टर
4. ~ ्यूड सिगमंड, ''द इगो ऐन्ड द आईडी., साइमन ऐन्ड शूस्टर, 2019
5. जंग, कार्ल गुस्टेव, ऐन्ड आर एफ सी हुल, ''द सेल्फ'' , ऱॉस करेंट्स, 7.3, 1957: 263 — 271
6. वेदान्त सार, रे.आर. बेलेन्टाइन, एस. जैन, 2007
7. सेवेन प्रिन्सिपिल्स ऑफ मैन, ऐनी बेसैन्ट, रिवाइज्ड ऐण्ड करेक्टेड एडीशन, 1909, द थिऑसफिकल पब्लिशिंग सोसाइटी, 161, न्यू बांड स्ट्रीट, डब्ल्यू. लंदन, इंग्लैंड
8. सेल्फ ऐण्ड शीथ, पृ 6
9. गीता रहस्य, बाल गंगाधर तिलक
10. सेल्फ ऐण्ड शीथ, पृ 6—7
11. मुण्डकोपनिषद, 2, 2
12. द सीक्रेट डाक्ट्रीन, एच.पी. ब्लैवैत्सकी, खण्ड 1
13. द सेल्फ ऐण्ड द शीथ, पृ 8
14. की टू थिऑसफी, सेक्शन 7
15. द सीकेट डाक्ट्रीन, एचपी ब्लैवैत्सकी, खण्ड 1.
16. छान्दोग्य उपनिषद, 2, 4, 3
17. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस गोरखपुर 7
18. छान्दोग्य उपनिषद, अध्याय 6
19. निरालम्बोपनिषद, 28
20. ब्रह्म ज्ञानावली माला, आदि शंकराचार्य, एस एन शास्त्री द्वारा अनुवाद, छन्द
21. वेदान्त सार, जे.आर.बेलेन्टाइन, एस. जैन 2007
22. कामायनी, चिंता सर्ग, जयशंकर प्रसाद
23. बृहदारण्यक उपनिषद, 1.3.28

क्रितिका गोयल

बन्धुत्व को वास्तविकता बनाना*

मैं दैनिक जीवन में बन्धुत्व को वास्तविकता बनाने हेतु विभिन्न विधियों और साधनों के बारे में कुछ प्रकाश डालना चाहूंगी। किसी सामान्य व्यक्ति या बालक के लिये, ''हम सभी ईश्वर के बच्चे हैं'' या ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिये उसे अन्य लोगों के साथ समरसता से रहना है'' या ''हमें दूसरों के दृष्टिकोण को सहन करना और उनका सम्मान करना चाहिये'', ये कुछ ऐसे कथन हैं जिन्हें लोग अनेक बार प्रयोग करते हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या जिस पर हम विश्वास करते हैं उस पर चलते हैं या जो हम करते हैं उस पर सच्चा विश्वास करते हैं?

अपने विद्यार्थी जीवन में मैं हॉस्टेल में रहती थी और देखा है कि देश के विभिन्न भागों से आये हुये लोग आराम से रह रहे हैं। और यदि मैने उचित प्रकार से देखा है, तो ऐसे लोगों को भी देखा है जो अपने को किसी भी वस्तु के साथ समायोजित कर लेते हैं, कोई कड़ापन नहीं, पूर्ण अनुकूलन, भरपूर प्यार और दूसरों के लिये करुणा, और मैं समझती हूं कि ये मानवीय गुणधर्म हैं जो किसी विश्वास प्रच्र म, किसी प्रकार के पालन पोषण, किसी प्रकार के मूल्यों से प्रेरित नहीं होते हैं। किन्तु एक दूसरा भी आयाम है। मेरे हॉस्टेल के दिनों में ऐसे भी अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आयी हूं जो ईष्यालु हैं और जो विश्वासघाती हैं और पूरी तरह से बन्धुत्वहीन आचरण प्रदर्शित करते हैं। मेरा विश्वास है कि बन्धुत्व की स्थापना किसी फेरी वाले से सब्जियां खरीदने जैसा नहीं है। मेरे लिये देखना और आन्तरिक एकत्व स्थापित करना बहुत विश्राम दायक लगता है।

हमें याद करना चाहिये कि संसार का नेतृत्व स्पर्धा से नहीं बल्कि सहकारिता से होता है। केवल विभिन्न जाति, धर्म, प्रजातियों और सभी समूहों के लोगों को एकत्व में लाना ही बन्धुत्व का अर्थ नहीं है, किन्तु जैसा कहा जाता है कि परोपकार घर से प्रारम्भ होता है, इसी प्रकार से इस अवधारणा को वास्तविकता में बदलने के लिये हमें घर से प्रारम्भ करना चाहिये। हम जहां रहते हैं वहां से बन्धुत्व का प्रारम्भ होना चाहिये। क्योंकि एक वृक्ष उगाने के लिये एक बीज गाड़ना होगा और इस कार्य के लिये घर से अच्छा और कौन सा स्थान हो सकता है।

* प्रयास लॉज गाजियाबाद, उ0प्र0 की सदस्य
ख्इण्डियन सेक्शन, थि0 सो0 के 131 वें अधिवेशन जो 29 अक्टूबर 2022 को सम्पन्न हुआ था, में प्रस्तुत किये गये व्याख्यान पर आधारितह

अतः अब मैं कुछ ऐसी विधियां साझा करूंगी जिनका नियमित प्रयोग करके परिवर्तन लाया जा सकता है। इस दिशा में पहला बिन्दु है सहिष्णुता मैनें कुछ समय पहले एक समाचार पढ़ा कि एक लड़की अपने पिता को मार कर अपनी आयु के किसी लड़के के साथ भाग गयी। और यदि हम उसकी आयु बतायें तो यह बिन्दु लागू करने योग्य है। उसकी आयु 14 वर्ष थी। मैं निश्चित हूं कि हम में से ऐसे अनेक लोगों को या उनको स्वयं को यह कहते हुये सुना होगा कि, ''मैं यह दुखदायी वस्तु या स्थिति सहन नहीं कर सकता हूं।'' किन्तु मैं जानना चाहूंगी कि वह दुखदायी वस्तु है क्या और सहन करनें से आप का क्या तात्पर्य है? इस प्रकार की बहुमुखी समाज में एक गुण जिसकी बहुत आवश्यकता है वह है, सहनशीलता। एक मशीन के लिये जो कार्य लुब्रीकेटिंग तेल करता है वही कार्य यह बहुमुखी समाज में करता है। यह घर्षण को रोकता है, विध्वंसकारी प्रवृत्तियों को रोकता है और पूरे संगठन को सुचारु रूप से चलने देता है।

किन्तु हम लोगों को जानना चाहिये कि वास्तविक सहनशीलता क्या है और छद्म सहनशीलता से इसकी पहचान करने में सक्षम होना चाहिये, जिससे बहुत बार वास्तविक समझ कर ली जाती है। यदि हमारा किसी व्यक्ति से मतभेद है तो हमें सैद्धांतिक रूप से यह पहचान कर लेनी चाहिये कि उसे अपने ढंग से सोचने और कार्य करने का अधिकार है, किन्तु हमारे अन्दर घृणा की प्रवृत्ति हो सकती है जो हमें दूसरों का दृष्टिकोण समझनें से रोकती है और हमारे अन्तर्मन मे विरोधी भाव का कारण बन जाती है। अपने आपसी सम्बन्धों में हम इस प्रकार की सहनशीलता नहीं रखते हैं और वह जो भिन्न भिन्न तत्वों का समरसता हो और पूर्ण समायोजन ला सकती हो, जो अपना कार्य करने के लिये उचित रूप से समझौता कर सके। जिस सहिष्णुता की हमें आवश्यकता है वह उसमें यह पहचान होनी चाहिये कि प्रत्येक आत्मा मूल रूप से दिव्य है और वह जीवन को अपने निजी प्रकार से अनावरित कर रही है और अपने मार्ग पर चल रही है जो हमारे मार्ग से निश्चित ही भिन्न है। यदि हम वास्तव में इस प्रकार प्रतीत करें और मात्र अरूप सिद्धांतों को न समझते रहे, तो अपने साथ के सदस्यों के प्रति कोई खुली या छिपी घृणा और शत्रुता की प्रवृत्ति नहीं होगी; इसके विपरीत, उनके प्रति किसी सीमा तक सद्भावना और सहानुभूति होनी चाहिये चाहे हम उनके दृष्टिकोणों से सहमत हों या असहमत हों, यदि हमें किसी का विरोध करना है, तो वह बिना किसी हार्दिक घृणा के, उस योजना के एक अभिकर्ता के रूप में अपनी स्थिति के अनुसार अपना धर्म निभाना चाहिये। यदि हम किसी सदस्य में गलतियां और अवगुण भी देखें तो उनके प्रति हमारे अन्दर विकर्षण नहीं होना

चाहिये। उस मित्र में दया नहीं है जो हमें प्रसन्न करने वाली बातें कहता है, किन्तु हमारी अप्रसन्नता के डर से हमारी कमजोरियों की चर्चा नहीं करता है।

वे माता–पिता निर्दयी हैं जो बच्चे को मनमानी करने के लिये छोड़ देते हैं, और अनुशासन सीखने के लिये वे संसार में कार्य के लिये उतरते हैं। हमें दिव्य जीवन तक पहुंचना चाहिये जो अविकसित और अनियंत्रित शरीर में कैद है, और बन्धुत्व की भावना के साथ अपने बन्धु को उसकी बाधायें दूर करने में सहायता करना चाहिये। केवल इस प्रकार का विस्त्रित दृष्टिकोण जो सब को आगोश में लेती हुयी प्रवृत्ति है, जो सहनशीलता कहलाने योग्य हो और जो इतने सारे बहुमुखी तत्वों को आपस में जोड़ सकती हो, पूर्ण समरसता में कार्य करती हुयी, और सामान्य उद्देश्य की ओर अग्रसर हो, विकसित करना चाहिये।

संसार में वर्तमान विचारों और दृष्टिकोणों में, दूरगामी परिवर्तन लाने के लिये अगला महत्वपूर्ण कार्य है सहकारिता, सहिष्णुता यद्यपि आवश्यक है, पर सहिष्णुता मात्र पर्याप्त नहीं है। उसके अतिरिक्त एक सामान्य लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिये जिसकी आवश्यकता है वह है कार्य करने के लिये प्रतिबद्धता, चि याशील सहकारिता की प्रवृत्ति और प्रत्येक प्रकार के टेम्परामेंट और सोच वाले लोगों के साथ कार्य करने की क्षमता। हम इन भिन्नताओं को दूर नहीं कर सकते हैं, हम सदा अपने सहकर्मी चुन नहीं सकते हैं, और फिर भी हमें साथ कार्य करना है। इसलिये साथ कार्य करने के लिये सहभागिता की भावना होनी चाहिये और अपने सहकर्मी को सहायता और नैतिक सहारा, जिसकी उसे अपने कार्य में आवश्यकता पड़ सकती है। किन्तु, दूसरों को सहायता करने की कामना ऐसी सीमा तक नहीं जाने देना चाहिये कि वह एक रुकावट बन जाये। हमें अन्य लोगों को उनका कार्य उनकी तरह करने दें, भले ही उसकी उस कार्य के करने की विधि को आप उन परिस्थितियों में सर्वाधिक उचित ढंग न मानते हों। जहां सहायता की आवश्यकता हो वहां हमेशा सहायता के लिये तैयार रहना फिर भी दखल देने की कोई मंशा न रखना मन की एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसे लाना आसान नहीं है, फिर भी लाना होगा यदि 'अग्रज बन्धुओं' के निर्देशन में कार्य करने और बन्धुत्व स्थापित करने का विशेषाधिकार प्राप्त करना है।

इस सम्बन्ध में सहानुभूति भी बहुत जीवन्त भूमिका निभाती है। हममें से अधिकांश लोग अपनी ही समस्याओं और कठिनाइयों में इतने उलझे रहते हैं कि वे उन भयंकर समस्याओं के बारे में जागरूक नहीं रहते हैं जो संसार में हो रही होती हैं, किसी असामान्य समय में नहीं, जब बाहर सब कुछ खुशहाल और सम्पन्न लग रहा हो। संसार के विभिन्न भागों में होने वाली भयावह विपत्तियां जो

दुर्भाग्यवश कभी कभी आती हैं, वे हमें और हमारी भावनाओं को हिला नहीं पाती हैं कि हम सहानुभूतिपूर्ण प्रतिचि या कर सकें।

लाखों लोग घायल होते हैं और भयंकर कष्ट के साथ मरते हैं, लाखों घरों का विनाश हो जाता है और महिलायें, बच्चे और बृद्ध बिना किसी भौतिक या भावनात्मक सहारे के छोड़ दिये जाते हैं। किन्तु जो इन सब कष्टों की परीक्षा से नहीं गुजरे, अप्रभावित रहते हैं जब कि जो लोग इस भयंकर अनुभव से गुजरते हैं वे कठोर हो जाते हैं। यदि हम मालूम करनें का कष्ट करें तो पायेंगे कि सामान्य समय में भी दुख जो विभिन्न स्थानों में होता है वह प्रचण्ड है। किन्तु प्रायः वे हमारी सहानुभूति को जगा नहीं पाते हैं। यदि वे ऐसा कर सकते तो हम उनके प्रति उदासीन नहीं रहते बल्कि उन परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करते जो इन अनावश्यक दुखों को जन्म देती हैं। और जब हम संसार में होने वाले इस विनाश और दुखों का कारण खोजते हैं तो वास्तविक तौर पर उन्हें दूर करना चाहते हैं, केवल तब हम थिऑसफी और सनातन ज्ञान के सत्यों के प्रयोग करने का वास्तविक मूल्य समझेंगे और तब हम उस ज्ञान को सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिये उपयोग करेंगे। इसलिये हम हम देखते हैं कि कैसे, जब मानवता की सहानुभूति पूरी तरह से विकसित हो चुकी होगी तब हमारा जीवन अपने आप अपने को उस कार्य के लिये समायोजित कर लेगा जो संसार की परिस्थितियों में सुधार करने के लिये आवश्यक है। बिना इस वास्तविक सहानुभूति के बन्धुत्व एक मात्र बौद्धिक अंधविश्वास हो कर रह जायेगा, जो हमें प्रेरित नहीं करेगा और हृदय को चलायमान नहीं कर पायेगा और इसलिये हमारी सारी गतिविधियां अनुत्पादक और निष्प्रभावी कर देगा।

अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु है प्रेम। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति और वस्तु में प्रेम है, अच्छाई है और प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु में बुराई है। इनमें से किसी एक के बारे में विचार करने से हम उसको संवर्धित करते हैं और विकास की या तो सहायता करते हैं या उसमें बाधा डालते हैं, हम लॉगॉस की सहायता करते हैं या उसके कार्यों को रोकते हैं। हमें तीव्र प्रेम से इतना भरा हुआ होना चाहिये कि हम अपने आस पास इसे वितरित करने के अवसर खोजते रहें केवल मानवता के लिये ही नहीं बल्कि जन्तु वर्ग के लिये भी। हम इसे छोटी छोटी वस्तुओं में वितरित करते रहें। क्योंकि जब हम ईश्वर से एक होने की कामना करते हैं तो वह अपने लिये नहीं, बल्कि इसलिये कि हम उसके प्रेम की धारा बन जायें ताकि उसका प्रेम हमारे साथ के लोगों तक पहुंच जाये। ''ईश्वर प्रेम है और जो भी प्रेम में रहता है वह ईश्वर में रहता है।''

वह जो मार्ग में है वह अपने लिये अस्तित्व में नहीं है, किन्तु दूसरों के लिये है; वह दूसरों की सेवा के लिये अपने को भूल गया है। वह ईश्वर के हाथ की कलम की भांति है। जिसके माध्यम से उसके विचार बहते हैं और यहां नीचे अपनी अभिव्यक्ति पाते है, जो कलम के बिना नहीं हो सकते थे। फिर भी, साथ साथ वे वह एक अग्नि की ज्वाला भी हैं, जिससे उत्सर्जित दिव्य प्रेम की किरणें उसका हृदय ओत प्रोत करती हैं।

अब हम एक छोटी सी कहनी साझा करके समापन करूंगी।

भारत के हृदय में एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। वे अपेक्षाकृत गरीब थे और उस क्षेत्र के खेतों से दूध एकत्रित करके उसे नगर की बाजार में बेंचते थे।

एक दिन अन्य दिनों की भांति किसान कार्य के लिये निकल पड़ा। उसनें अपने बैलों को खिलाया और उन्हें गाड़ी में जोड़ लिया। प्रत्येक वस्तु सामान्य लग रही थी, जब तक कि आगे के पहिये नें बोलना नहीं प्रारम्भ किया, ''मैं इतना महान हूं। देखो मैं कितना अच्छा बना हूं। सर्वश्रेष्ठ लोहे की छड़ें मेरे वृत्ताकार ़ेम को बनाने में प्रयोग की गयीं हैं। लकड़ियां इतनी बार प्रयोग के बाद भी चमकदार स्थिति में हैं और देखो भूमि पर मैं कितना सुन्दर रेखाचित्र बनाता हूं। मेरे बिना यह पूरी गाड़ी एक इंच नहीं चल सकती है!''

''तुम बिलकुल बेकार की वस्तु हो, प्रिय पहिये'' लकड़ी के पटरों में से एक ने कहा। ''हम लोगों के बिना, कोई गाड़ी ही नहीं होगी! हम पटरों नें ही पूरी गाड़ी को जोड़ कर रखा है। हम दूध को गिरने से रोकते हैं और किसान को बैठने के लिये स्थान भी प्रदान करते हैं।''

''ठीक हो सकता है।'' पहिये ने कहा, ''किन्तु अंततः मैं और मेरे तीन पहिये भाई गाड़ी के सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग हैं!''

''क्या तुम इतने सुनिश्चित हो?'' एक छोटी सी आवाज बोली, ''कौन बोल रहा है?'' पहिये ने उत्तर दिया, ऐसा दिखाते हुये कि उसनें सुना ही नहीं। ''यह मैं हूं। पेंच।''

''पेंच?'' पहिये नें पूछा और उसकी हंसी फूट पड़ी। ''सभी भागों में से तुम? तुम इतने छोटे हो, हम तुम्हें असली रूप में देख भी नहीं पाते हैं! तुम वास्तव मे बिलकुल महत्वपूर्ण नहीं हो! तुम चलते भी नहीं हो, तुम अपने बोल्ट मित्रों के साथ बैठे रहते हो और कुछ नहीं करते हो। कुछ नहीं, हम पहिया लोग कठिन परिश्रम करते हैं और दिन रात घूमते रहते हैं, तुम सभी को खेतों और जंगल में ले जाते हैं। किन्तु तुम्हारी तरह एक नन्हा सा पेंच? तुम्हें तो बोलना भी नहीं

चाहिये!'' ये पहिये से आने वाले शब्द बहुत कटु थे। सौभाग्यवश इन शब्दों नें पेंच को क्ोधित नहीं किया। पर उसको एक विचार सूझा। उसने विचार किया कि इस अहंकारी पहिये को एक अच्छा पाठ सिखाउंगा। अगले मोड़ पर जब दूध के सभी बर्तन लकड़ी के पटरों की ओर फिर से झुके तब उन्होंने अपनी सारी शक्ति एकजुट किया और अपनी धुरी पर बार बार घूमे। कुछ देर बाद उन्होंने अपने को इतना घुमा दिया कि वह घास पर गिर पड़े और उसके गिरने की आवाज भी नहीं आयी। उसी क्षण दो पटरे जो छोटे से पेंच से एक दूसरे से जुड़े हुये थे ढीले पड़ गये और दूध के बर्तन को नीचे गिरने का रास्ता दे दिया। एक के बाद एक दूध के बर्तन लुढ़क गये और उस ढीले पटरे से टकराये और तेज आवाज के साथ जमीन से टकराये। पटरे इतने ढीले हो गये कि एक एक करके सभी चै क हो गये और पूरी गाड़ी टूट कर गिर गयी। किसान ने चौंक कर पीछे देखा, किन्तु देर हो चुकी थी। वह गाड़ी से बाहर आ कर गिरा और एक पास के पॉपी ‹अफीमद्ध के खेत में जा गिरा। ''हे ईश्वर! यह क्या हो गया।'' किसान चिल्लाया। पटरे, पहिये और दूघ के कैन सब रास्ते में बिखर गये थे। ''उसनें अपने सिर की पगड़ी उतारी और अपना सिर खुजलाने लगा। मैं इस बिखराव को कैसे समेटूंगा उसे पहियों को फिर से लगाने और ़ेम को फिर से ठीक करने में बहुत समय नहीं लगा। किन्तु सब कुछ वापस ठीक करने में समस्या थी। ''इसके छोटे छोटे बोल्ट कहां चले गये?'' किसान चिल्लाया और छोटे छोटे चमकते हुये पेंच खोजने लगा। उसने अनेक घण्टों तक खोजा, घास के तिनकों में खोजता रहा अन्त में उसने सारे पेंच खोज लिये। ''ईश्वर को धन्यवाद'' अंतिम पेंच घास से उठाते हुये उसने कहा। ''तुम्हारे बिना मैं कभी अपनी गाड़ी फिर से न जोड़ पाता।

अंत में गाड़ी फिर से तैयार हो गयी और किसान फिर से अपने घर की ओर चल पड़ा। अधिकांश दूध के कैन खाली हो चुके थे और उसे बेचने के लिये और कुछ नहीं बचा था।

''मैं मूर्ख था'' पहिये ने कहा। ''मैं शेखी बघार रहा था और दिखा रहा था कि मैं कितना महान हूं, जब कि वास्तव में तुम्हारी सभी की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि मेरी। केवल एक पूर्ण के रूप में। हम सब एक साथ गाड़ी कार्य योग्य बनाते हैं और अब, मेरे कारण बेचारे किसान नें अपनी साप्ताहिक कमाई खो दी। मुझे खेद है कि मैने तुम सब को बुरा प्रतीत करवाया। अब मैं समझ सकता हूं कि तुम कितने ही छोटे क्यों न हो, तुम्हारी उतनी ही आवश्यकता है जितनी बाकी सब की। पेंच, और पटरे, बोल्ट्स और दूध के कैन भी वास्तव में प्रसन्न हो गये कि पहियों को बुद्धि आ गयी, और इस दिन के बाद

किसान को फिर कभी गाड़ी से कोई समस्या नहीं आयी।

समाचार और टिप्पणियां

बाम्बे

बुद्ध पूर्णिमा–वैशाख आशीर्वाद– दि0 5 मई 2023 को ब्लैवैत्सकी लॉज में बुद्ध पूर्णिमा उत्सव के लिये एक समारोह आयोजित किया गया।

बहन रूबी खान, मास्टर ऑफ सेरीमनी ने बहन महाजावेर दलाल, सचिव, बाम्बे फेडरेशन, से इस पवित्र बैठक में उपस्थित सभी बन्धुओं का स्वागत करने का निवेदन किया। बहन महाजवेर दलाल नें कहा, ''हम धन्य हैं जो इस ग्रीनरूम में, जो भगवान बुद्ध की मूर्ति के पास है में एकत्रित हुये हैं। और भक्तिभाव से भगवान बुद्ध को उनकी करुणा और अपने दर्शन और मानवता को आशीर्वाद देने हेतु पृथ्वी के निकट आने के लिये कृतज्ञता अर्पित की।

बहन मेहरंगीज बारिया नें भक्तिभाव जगाने हेतु बुद्धिस्ट प्रार्थना कही।

बन्धु नवीन कुमार नें इस अवसर पर कहा कि सिद्धार्थ गौतम इस मानवता के ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने बुद्ध पद की दीक्षा प्राप्त की। इसके पहले के बुद्ध पृथ्वी के बाहर अन्य श्रृंखला से आते थे। बुद्ध नें अपने पहले प्रवचन में, जिसे धर्म चय प्रवर्तन सूत्र कहते हैं, इस बात पर जोर दिया था कि वर्तमान स्तर पर अंतिम दैवी शक्ति जो संसार की सृष्टि का शासन करती है, की प्रकृति को जान पाना कठिन है। इसलिये सदाचार पर अधिक जोर दिया जाना चाहिये। इस प्रकार की सलाह विश्व के सभी महान धर्मों में दी गयी है। बुद्धिस्ट प्रार्थना की अंतिम चार पंक्तियां पांच प्रतिज्ञाओं पर जोर देती हैं जिन्हें पंचशील कहते हैं।

वैशाख उत्सव पर भगवान बुद्ध सारे भक्तों को वैशाख घाटी में दर्शन देते हैं। इसी प्रकार अषाढ़ पूर्णिमा के दिन संसार के सारे सिद्ध महात्मा एकत्रित होते हैं और भगवान मैत्रेय धर्म चय प्रवर्तन सूत्र का प्रवचन करते हैं।

बहन कश्मीरा खम्बाता नें बुद्ध पूर्णिमा पर एक पावर प्वांइट प्रजेन्टेशन प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में सुन्दर और प्रेरक चित्र और रेखाचित्र प्रस्तुत किये गये और इस उत्सव की सुन्दर व्याख्या की गयी। बहन कश्मीरा नें सदस्यों को महामंगल सूत्र और बुद्धिस्ट प्रार्थना का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया।

बहन जैस्मीन कावास्जी नें सभी को धन्यवाद दिया और मेज पर रखे गये पवित्र जल को सभी में वितरित किया।

बन्धु आर्नी नरेन्द्मन के द्वारा 'ओम् मणि पद्मे हुम' पर ध्यान के संचालन

के साथ बैठक का समापन हुआ।

त्रिवेणी ट्यूज्डे मीट नें भी दि0 2 मई 2023 को बुद्ध पूर्णिमा – वैशाख पूर्णिमा पर जूम पर ऑनलाइन बैठक की। बन्धु के. दिनकरन जो मुख्य वक्ता थे नें अंग्रेजी में दिये गये अपने वक्तव्य में भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में बताया। उन्होंने भगवान बुद्ध के सम्बन्ध में पुस्तकों का भी उल्लेख किया।

दि0 8 मई को ब्लैवैत्सकी लॉज के बेसैंट हाल में 'फ्वाइट लोटस दिवस' मनाया गया। बीटीएफ के सदस्य घाटकोपर, उत्तर मुम्बई तक से बेसैन्ट हाल में एचपी ब्लैवैत्सकी, थिऑसफिकल सोसाइटी की संस्थापक और प्रकाश वाहक, के शान्तिलीन होने की 132 वीं वार्षिकी में सम्मिलित होने के लिये सम्मिलित हुये थे।

इस अवसर पर लाइट आफ एशिया, भगवद्गीता और वाइस ऑफ द साइलेंस के अंश पढ़े गये।

एचपी ब्लैवैत्सकी नें मृत्यु के कुछ पहले अपने मृत्युलेख में यह सलाह दी थी कि उनके मित्र उनकी मृत्यु की वार्षिकी पर कवि एडविन अर्नाल्ड की लाइट ऑफ एशिया और प्राचीन हिन्दू ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता के कुछ अंश पढ़ें। बाद में कर्नल एच.एस. ऑल्कॉट नें उसमें एच.पी.बी. की पुस्तक वाइस ऑफ द साइलेंस भी जोड़ दिया था। उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद य1882ह्में उसी दिन सफेद कमल बहुत भारी संख्या में खिले इसलिये इस दिन को श्वेत कमल दिवस कहा जाने लगा। ऐसा ब्लैवैत्सकी लॉज की अध्यक्ष बहन कश्मीरा खम्बाता ने बताया।

बन्धु विनायक पाण्या, बीटीएफ अध्यक्ष, द्वारा एचपीबी के चित्र के पास रखे दीप को जलानें और सदस्यों द्वारा सभी धर्मों की प्रार्थना के साथ बैठक का प्रारम्भ हुआ। उसके पश्चात बन्धु पाण्ड्या के आह्वान पर सभी सदस्यों द्वारा यूनीवर्सल प्रार्थना की गयी।

बन्धु विनायक पाण्ड्या नें फ्वाइट लोटस दिवस पर पढ़े जाने वाले ग्रन्थों का महत्व बताया। तत्पश्चात उन्होंनें भोवाली कैम्प में गुजरात थिऑसफिकल फेडरेशन द्वारा 'की टू थिआसफी' के गुजराती अनुवाद पर सम्पन्न अध्ययन शिविर में प्राप्त अपनें अनुभवों की चर्चा की जिसमें उन्हें एक रिसोर्स परसन के रूप में आमंत्रित किया गया था।

सेंटेनरी के नये सदस्यों जो शान्ति और ज्योति लॉज से थे का स्वागत किया गया और उन्हें डिप्लोमा हस्तांतरित किये गये।

यह प्रेरणादायक था कि कुछ नये सदस्यों नें पढ़ने का कार्य किया। घाटकोपर लॉज से बन्धु सुहास गोस्वामी नें भगवद्गीता के अंश पढ़े और उनकी व्याख्या प्रस्तुत की।

सेंटेनरी लॉज के बन्धु पंकज गुप्ता नें वाइस ऑफ द साइलेंस के अंश

पढ़े और उनकी व्याख्या की।

सेंटेनरी लॉज के बन्धु सुदेश कुमार नें 'लाइट ऑफ एशिया' के कुछ अंश पढ़े और उसकी व्याख्या भी की।

वसन्ता लॉज के बन्धु अपूर्व प्रकाश नें मैडम ब्लैवैत्सकी के जीवन के बारे में प्रकाश डाला।

सेंटेनरी लॉज के बन्धु अनिल कुमार देशपाण्डे नें श्वेत कमल दिवस के महत्व की व्याख्या की। उन्होंने बताया कि मैडम ब्लैवैत्सकी अपने पिछले किसी जन्म में अबुल फजल थीं। उन्होंने बहुत यात्रायें की थीं और अनेक गुप्त संघों में गयीं थीं। उन्होंने 'स्वर्ण सोपान, का पाठ किया।

ब्लैवैत्सकी लॉज के उपाध्यक्ष बन्धु नवीन कुमार नें अपनी वार्ता में कहा कि एचपीबी नें अपने जीवन में सारे संसार का भ्रमण किया था। थिऑसफिकल सोसाइटी का जन्म तब हुआ जब वे कर्नल ऑल्काट से मिलीं। वे अनेक प्रेताफ्वाहन बैठकों में गये जिनमें मृत्यु प्राप्त आत्मायें किसी व्यक्ति के माध्यम से बातें करती हैं और कभी कभी चमत्कार भी प्रदर्शित करती हैं। उन सब नें उन्हें विश्वास दिलाया कि भौतिक संसार के बाहर भी जीवन है। वे मास्टर्स के द्वारा निर्देशित किये गये कि वे पूर्व की यात्रा करें। यही कारण था कि वे भारत पहुंचे। कर्नल ऑल्कॉट और एचपीबी दोनों का मत था कि सभी धर्मों में समान प्रज्ञान था अर्थात धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया।

वसन्ता लॉज की बहन रंजन कतार्कर नें हिंदी में बताया कि थिऑसफी सभी धर्मों का सामान्य सार बताती है, जो सत्य है। सत्य से बढ़ कर कोई धर्म नहीं है।

बन्धु नवीन कुमार नें 'ओं सर्वे भवन्तु सुखिनो' प्रार्थना का पाठ किया। बन्धु तरल मुंशी नें अपनी कविता, 'रेनबो ऑफ " ूमैनिटी' पढ़ कर कार्य च म का समापन किया। अंत में सदस्यों नें मेज पर रखे श्वेत पुष्प एच.पी.बी. के चित्र, दीप और श्वेत कमल को अर्पित करके उनको श्रद्धांजलि दी।

बन्धु आर्नी नरेन्द्रम द्वारा थिआसफिकल सोसाइटी, मास्को, रूस को भेजा गया संदेश

श्वेत कमल दिवस के अवसर पर बन्धु आर्नी नरेन्द्रम नें ब्लैवैत्सकी लॉज से अडयार थिऑसफिकल सोसाइटी, मास्को को एक वीडिओ संदेश भेजा। इस संदेश में उन्होंने थिऑसफिकल लक्ष्य 'विश्वबन्धुत्व के वैश्वीकरण' के प्रसार की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। यह आन्दोलन के वर्तमान आर्थिक वैश्वीकरण के विचार में एक नयी दिशा है। बन्धु अलेस्की बास्पुतिन, थिआसाफिकल सोसाइटी, रूस के अध्यक्ष संदेश की प्रशंसा इन शब्दों के साथ

की – 'प्रेरक! मन में मेरा विचार आपके साथ है।'

सेंटेनरी लॉज बान्द्रा, जो 75 वर्ष से है, नें दि0 23 अप्रैल 2023 को सायं 5.30 बजे बन्धु अनिल कुमार देशपाण्डे के आवास पर एक पुनर्प्रारम्भ बैठक आयोजित की। इस अवसर पर बन्धु विनायक पाण्ड्या, अध्यक्ष, बीटीएफ, भी सम्मिलित हुये। सेंटेनरी लॉज में बन्धु अनिल कुमार और बन्धु सुदेश कुमार के उत्साह के कारण, सदस्यता में वृद्धि हो रही है।

शांति लॉज जो 76 वर्षों से है, महामारी के पश्चात एजीएम के साथ दि0 27 अप्रैल 2023 को पुनः प्रारम्भ किया गया। प्रारम्भ में मासिक बैठकें होंगी। यह लॉज अध्यक्ष बहन अबान पटेल के प्रयासों का परिणाम है जो धन्यवाद की पात्र हैं।

त्रिवेणी ट्यूज्डे मीट का विस्तार त्रिवेणी अंतर्राष्ट्रीय फेडरेशन्स में हो रहा है, जिसकी पहली बैठक मंगलवार दि0 16 मई 2023 को हुयी जिसमें ग्रीस, उत्कल, गुजरात और बाम्बे फेडरेशन्स सम्मिलित हुये। थीम थी 'अपने आप को जानो'। अतिथि वक्ता बहन एरिका जिऑर्जिआडेस नें अंग्रेजी में अपना वक्तव्य दिया। बन्धु भबानी संकर ने इसका उड़िया में अनुवाद और बहन विभा सक्सेना ने इसका हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया। बन्धु तरल मुंशी मॉडरेटर थे। प्रस्तुति प्लूटार्क के विचार, 'द शिप ऑफ थेसिअस' पर आधारित था।

दि0 14 मई 2023 को 10.00 एएम पर बन्धु सुभाष गोस्वामी के आवास पर घाटकोपर में आदिनाथ लॉज का उद्घाटन किया गया। एकत्रित लोगों में बन्धु सुभाष गोस्वामी, बहन सुधाबेन छोटालाल शाह, बहन विनायक शाह, बहन पूनम उपाध्याय और बन्धु दीपक सम्पत थे। बाम्बे थि0 फेडरेशन के अध्यक्ष बन्धु विनायक पाण्ड्या नें थिऑसफिकल लॉज और थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस की गतिविधियों के बारे में वक्तव्य दिया। बन्धु तरल मुंशी, बीटएफ कोषाध्यक्ष, नें थिऑसफी के बारे में बताया और अभिलाषा अभिव्यक्त की कि वे बन्धु दीपक के विद्यालय में अपने विचार साझा करना चाहते हैं। बहन सुधाबेन नें 'जीवन का मार्ग' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। बहन पूनम उपाध्याय महीने में दो बार लॉज, जहां तक सम्भव हो रविवार को, अध्ययन बैठकें सम्बोधित करेंगी। बन्धु सुभाष और उनके परिवार को उनके उत्साह और हास्पिटलिटी और जलपान व्यवस्था के लिये धन्यवाद दिया गया।

बिहार

दि0 27 और 28 फरवरी को छपरा लॉज में बन्धु यू.एस. पाण्डेय, राष्ट्रीय वक्ता द्वारा 'बेसिक थिऑसफी' विषय पर अध्ययन संचालित किया गया।

दि0 28 मई को बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें राजेन्द्र कालेज छपरा के

विद्यार्थियों को 'सफल जीवन' पर उद्‌बोधित किया।

दि0 29 मई को मुर्जं फरपुर लॉज में 'भारत में थिऑसफी के प्रसार के लिये ऐनी बेसैन्ट का योगदान' विषय पर एक दिन का अध्ययन शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर बन्धु चित्तरंजन सिन्हा 'कनक' नें बैठक की अध्यक्षता की जिसमें बन्धु उदय शंकर श्रीवास्तव, बन्धु प्रेम कुमार वर्मा, बन्धु शैलेन्द्रश्रीवास्तव, बन्धु रमेश प्रसाद श्रीवास्तव नें भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

दि0 5 मई को मुर्जं फरपुर लॉज में बुद्ध पूर्णिमा का आयोजन हुआ जिसमें बिहार फेडरेशन के अध्यक्ष बन्धु चित्तरंजन सिन्हा 'कनक' नें भगवान बुद्ध के विचारों पर प्रकाश डाला और कहा कि 'आज हमें बुद्ध की आवश्यकता है और योद्धा की नहीं।'

गोपालगंज लॉज में लॉज अध्यक्ष बन्धु राज किशोर प्रसाद नें कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं में अहिंसा एक मुख्य गुण है जिसे हमें अपनाना चाहिये। छपरा, समस्तीपुर, असिआना नगर और कुछ अन्य लॉजों ने भी दि0 5 मई को बुद्ध पूर्णिमा उत्सव मनाया।

दि0 16 जून 2023 को मोतिहारी लॉज द्वारा 'मृत्यु के बाद का जीवन' पर सी.टी. आवासीय दरोगा टोला, मोतिहारी में एक अध्ययन सत्र आयोजित किया गया। बन्धु राज किशोर प्रसाद, सचिव, बिहार थिऑसफिकल फेडरेशन मुख्य वक्ता थे। सत्र की अध्यक्षता बन्धु ग्रो0ह एस.सी. प्रसाद ने की और बन्धु एस.एन. पटेल, लॉज सचिव नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मराठी

मराठी थिऑसफिकल फेडरेशन नें दि0 20 से 26 मई 2023 की अवधि में भोवाली में एक अध्ययन शिविर आयोजित किया। बन्धु बी.डी. तेन्दूलकर नें 'वाइस ऑफ द साइलेस' पुस्तक पर अध्ययन कैम्प को संचालित किया। अशोक लॉज और पूना लॉज के सदस्य अध्ययन के लिये उत्साहित थे। नये सदस्यों नें विशेष ध्यान आकर्षित किया। कोर्स की प्रशासनिक व्यवस्था बन्धु सोनोने नें किया था। ग्रुप डिस्कसन और प्रश्नोत्तर सत्रों पर विशेष बल दिया गया था।

यूपी और उत्तराखण्ड

धर्म लॉज लखनप्र में दि0 3 मई 2023 को बन्धु बी.के. पाण्डेय नें सी सिनराजदास की पुस्तक 'आई प्रामिज' के ''ब्लिसफुल विचार'' अध्याय का अध्ययन संचालित किया। उसके बाद बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें एच.पी.बी. की पुस्तक 'प्रैक्टिकल अकल्टिज्म' के चैप्टर 'दैनिक जीवन के लिये कुछ व्यावहारिक सलाह' भाग 1 और भाग 2 पर अध्ययन संचालित किया। दि0 8 मई

को हुयी विशेष बैठक में धर्म लॉज में श्वेत कमल दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें श्वेत कमल दिवस की व्याख्या करते हुये बताया कि श्वेत कमल दिवस क्यों मनाया जाता है? उन्होंने बताया कि यह समारोह एच.पी. ब्लैवैत्सकी को श्रद्धंजलि के रूप में मनाया जाता है। बन्धु अशोक गुप्त नें एच.पी. बी के जीवन और उनके कार्य के बारे में परिचय दिया। उसके पश्चात भगवद्‌गीता, द लाइट ऑफ एशिया और वाइस ऑफ द साइलेंस के अंश च मशः बन्धु बी.के. पाण्डेय, बन्धु राजेश गुप्ता और बन्धु राजेश गुप्ता द्वारा पढ़े गये। उसके बाद प्रतिभागी सदस्यों द्वारा दो मिनट का मौन करके एच.पी.बी. और अन्य शांतिलीन हुये थिऑसफिस्टों को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। दि0 17 और 24 मई 2023 को हुयी बैठकों में बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें च मशः प्रैक्टिकल अकल्टिज्म के अध्याय 'दैनिक जीवन के लिये कुछ व्यावहारिक सलाह' के भाग 3, 4, 5 और भाग 6, 7 पर अध्ययन संचालित किये। बन्धु बी.के. पाण्डेय नें दि0 24 मई को 'व्यावहारिक थिऑसफी' विषय पर वार्ता की। बन्धु अशोक गुप्ता नें दि0 31 मई को 'मृत्यु और उसके बाद' विषय पर वार्ता की।

प्रज्ञा लॉज नें 8 मई को सत्यमार्ग लॉज के साथ संयुक्त रूप से श्वेत कमल दिवस मनाया।

निर्वाण लॉज आगरा में दि0 4 मई को बन्धु विनोद शर्मा नें 'कठोपनिषद भाग 2' पर वार्ता की। दि011 मई को 'उद्धव गीता' विषय पर बन्धु देवेन्द्रवाजपेई नें चर्चा की। बन्धु प्रवीण मेहरोत्रा नें दि0 25 मई को 'टेक्निक्स ऑफ स्पिरिचुअल लाइफ' पर वक्तव्य दिया। इनके अतिरिक्त दि0 8 मई को श्वेत कमल दिवस मनाया गया और दि0 18 मई को 'धर्म की उपयोगिता' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गयी।

सर्व हितकारी लॉज गोरखपुर में 8 मई को श्वेत कमल दिवस मनाया गया। दि0 17 मई को बन्धु अरविन्द नें 'मेडिटेशन' विषय पर चर्चा की। दि0 26 मई को बन्धु सतीश चन्द्रनें 'नैतिक शिक्षायें' विषय पर वार्ता की। दि0 31 मई को बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें '12 ऋ ियों का गूढ़ पक्ष' पर वक्तव्य दिया।

प्रयास लॉज गाजियाबाद में दि0 14 मई को बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें 'एचपीबी – एक जीवन रूपरेखा' विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने ही दि0 21 मई को 'यम और नियम' विषय पर वार्ता की।

नोयडा लॉज में दि0 21 मई को जी एस अरंडेल की पुस्तक, 'निर्वाण' के अध्ययन का संचालन जारी रखा गया।

चोहान लॉज कानपुर में दि0 8 मई को श्वेत कमल दिवस आयोजित किया गया। दि0 14 मई को बन्धु शिवबरन सिंह चौहान द्वारा 'सात किरणें' विषय

पर, दि0 21 मई को बन्धु एस.एस. गौतम द्वारा 'पाइथागोरस का जीवन' विषय पर और दि0 28 मई को बन्धु एस.के. पाण्डेय द्वारा 'ज्ञान योग' पर वक्तव्य दिये गये।

आनन्द लॉज प्रयागराज नें दि0 8 मई को श्वेत कमल दिवस समारोह आयोजित किया और दि0 20 मई को वार्षिक सामान्य सभा की।

काशी तत्व सभा, वाराणसी नें दि0 8 मई को श्वेत कमल दिवस मनाया और उसी दिन लॉज की एक्जीक्यूटिव कमेटी की बैठक की।

ऐनी बेसैन्ट लॉज वाराणसी नें दि0 8 मई को श्वेतकमल दिवस मनाया और बन्धु दिवाकर मौर्य नें इस दिवस के महत्व और कमल के प्रतीक की व्याख्या की। तत्पश्चात द लाइट ऑफ एशिया और श्रीमद्भगवद्गीता के अंश पढ़े गये।

बन्धु यू. एस. पाण्डेय नें 31 मई को भोवाली कैम्प में भाग ले रहे भोवाली लॉज के कुछ सदस्यों के साथ बैठक की और उनके साथ प्रशासनिक प्रकरणों पर चर्चा की। बन्धु पाण्डेय ने उसी दिन हुयी भोवाली लॉज की विशेष बैठकों में 'टी.एस. का मिशन स्टेटमेंट' और 'इनर गवर्नमेंट' विषयों पर चर्चा की।

दि0 9 मई को ब्रह्म विद्या लॉज, ग्राम जिगना, जि0 गोरखपुर में बन्धु विजय प्रताप नें 'भगवान बुद्ध की शिक्षायें' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त बन्धु अश्विनी और बन्धु शेषनाथ नें दि0 31 मई को 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' पर वार्तायें कीं।

सत्यदर्शन लॉज, ग्राम जोगिया, जि0 सिद्धार्थनगर में 27 मई को नये सदस्यों को डिप्लोमा हस्तांतरित किये गये और उसके पश्चात बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा द्वारा 'इतिहास, उद्देश्य और थिऑसफिकल सोसाइटी का प्रस्ताव' विषय पर और बन्धु सतीश चन्द्रऔर सर्व हितकारी लॉज गोरखपुर के बन्धु एल.एस. शुक्ला, जो वहां उपस्थित थे नें भी 'थिऑसफी' पर संक्षेप में बोला।

ग्रेटर नोयडा में एक नये लॉज 'मैत्रेय लॉज' की स्थापना की गयी है। इसके चार्टर के लिये प्रार्थनापत्र भारतीय सेक्शन को भेज दिया गया है।

भारतीय सेक्शन के कार्यों / कार्यक्रमों में योगदान

बन्धु एस.एस. गौतम नें सेक्शन की पत्रिका ''द इंडियन थिऑसफिस्ट'' के जून 2023 के अंक का हिंदी में अनुवाद किया।

बहन सुव्रलिना मोहन्ती और बहन प्रान्शी मोहन्ता नें भारतीय सेक्शन के त्रैमासिक ई–न्यूज लेटर के पहले अंक की डिजाइन की थी जो 8 मई को जारी हुआ।

बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें भारतीय सेक्शन द्वारा 14 और 21 मई को 'थिऑसफी एक्सप्लेन्ड' और 'ड्यूटीज ऑफ थिऑसफिस्ट' विषयों पर

आयोजित सत्रों में मॉडरेटर की भूमिका निभाई।

अन्य मंचों के लिये योगदान

यंग इंडियन थिऑसफिस्ट

बहन श्रुति गोयल और बहन स्मृति सागर नें यंग इंडियन थिऑसफिस्ट समूह द्वारा दि0 28 मई को आयोजित कार्यक्रम में ''कार्य शब्दों की अपेक्षा अधिक तेज बोलता है'' विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

दि0 29 मई को बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें 'कहानियों के माध्यम से नैतिक शिक्षायें' विषय पर विद्यार्थियों और शिक्षकों की एक जन सभा में 'मुरारी इंटर कालेज, सहजनवां, जि0 गोरखपुर में वक्तव्य दिया।

पुस्तक का प्रकाशन

एक पुस्तक जिसका शीर्षक है 'थिऑसफिकल ब्लूम' लेखक यू. एस. पाण्डेय, और जो अंग्रेजी में 25 लेखों का संग्रह है, मई 2023 में प्रकाशित की गयी।

राष्ट्रीय वक्ता

बहन विभा सक्सेना नें भुवनेश्वर में 2 से 4 मई की अवधि में आयोजित तीन दिवसीय अध्ययन शिविर का संचालन किया जिसका विषय था ''ओम् पद्मे हुम्''। उन्होंनें कटक लॉज द्वारा आयोजित पब्लिक व्याख्यान में ''जीवन का उद्देश्य'' विषय पर भी सम्बोधित किया।

बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें बरबटी लॉज कटक के आयोजन में 29 मई को ''रियलाइजिंग द रिलेशनशिप'' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य दिया।

शंकर लॉज दिल्ली के आमंत्रण पर बन्धु श्याम सिंह गौतम नें दि0 6 मई को ''एचपीबी का जीवन और कार्य'' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य दिया।

बहन विभा सक्सेना नें दि0 16 मई को ''अपने आप को जानो'' विषय पर एक ऑन लाइन वक्तव्य रेवा लॉज और रोहित लॉज, गुजरात फेडरेशन और ज्योति लॉज, बाम्बे फेडरेशन के आमंत्रण पर प्रस्तुत किया।

बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें दि0 28 मई को ''सीक्रेट डाक्ट्रीन में एसॉटेरिक दर्शन का आधार'' ग्रथम सत्रहविषय पर ऑन लाइन व्याख्यान प्रस्तुत किया।

यंग इंडियन थिआसफिस्ट्स के आयोजन में बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें 14 मई 2023 को ''प्रेम'' विषय पर एक ऑन लाइन व्याख्यान प्रस्तुत किया।

थिआसफिकल सोसाइटी, अडयार द्वारा आयोजित कार्यक्रम, 'लाइब्रेरीज ऐज कम्युनिटी' में बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें ''मिस्टीसिज्म'' विषय पर दि0 6 मई को एक व्याख्यान दिया।

भारतीय सेक्शन मुख्यालय

दि0 8 मई 2023 को टी.एस., भारतीय सेक्शन मुख्यालय नें ऐनी बेसैन्ट हाल में श्वेत कमल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्व धर्म प्रार्थनाओं और यूनीवर्सल प्रार्थना से हुआ। डा0 कुमुद रंजन, अध्यक्ष, काशी तत्व सभा, नें अतिथियों का स्वागत किया। *वॉइस ऑफ द साइलेंस, द लाइट ऑफ एशिया* और *श्रीमद्भगवद्गीता* के अंश क्रमशः बहन उमा भट्टाचार्या, बहन भारती चट्टोपाध्याय और बहन डा0 अन्नपूर्णा द्वारा प्रस्तुत किये गये। बहन डा0 आभा श्रीवास्तव, सदस्य काशी तत्व सभा, नें ''एच.पी. ब्लैवैत्सकी और थिऑसफी'' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में उनके सनातन प्रज्ञान, ईमानदारी, अतीन्द्रिय दृष्टि और स्पष्टवादिता आदि विशेषताओं पर जोर दिया। उन्होंने व्याख्या की कि एच.पी.बी. नें सनातन ज्ञान सिखाया है और उस प्रज्ञान को प्राप्त करनें का मार्ग भी प्रकाशित किया है। उन्होंने व्याख्या की कि कोई किस प्रकार से संसार में निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य पूरे करके अपने को संसार से अनासक्त कर सकता है। वे इस बात पर विशेष बल देती थीं कि हम जो भी जीवन चुनें हमें अपने कर्तव्यों के प्रति सदा समर्पित रहना चाहिये और हमारा मन खुला और स्वच्छ होना चाहिये और तर्कबुद्धि जिज्ञासु होनी चाहिये।

बहन डा0 अन्नपूर्णा, उपाध्यक्ष काशी तत्व सभा, नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अध्ययन सत्र

बिहार थिऑसाफिकल फेडरेशन नें आसाम, बिहार, बंगाल और उत्कल फेडरेशनों के लिये एक अध्ययन शिविर हिमालयन अध्ययन केन्द्र भोवाली में 13 से 17 मई 2023 की अवधि में आयोजित किया। अध्ययन के लिये जे. ी हडसन की पुस्तक, ''बेसिक थिआसफी'' चुनी गयी थी। बन्धु बिपुल सर्मा, राष्ट्रीय वक्ता, बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा, राष्ट्रीय वक्ता, और बंगाल के बन्धु एस.एन. दत्ता कैम्प के निदेशक थे और बन्धु प्रो0 राज किशोर प्रसाद, बिहार थि0 फेडरेशन, कार्यक्रम के व्यवस्था अधिकारी थे। कुल मिला कर 36 सदस्यों ने इसमें प्रतिभागिता की।

टिप्पणी

एक्जीक्यूटिव कमेटी द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि बन्धु यू0 एस0 पाण्डेय भारतीय सेक्शन के उत्तर भारतीय प्रखण्ड के मुख्य होंगे और बन्धु एन. सी. कृष्णा भारतीय सेक्शन के दक्षिण भारतीय प्रखण्ड के मुख्य होंगे। मनोनीत बन्धु सम्बन्धित क्षेत्रों के फेडरेशनों और लॉजों के दौरे करेंगे और वहां के कार्यों को समायोजित करेंगे और सेक्शन के अध्यक्ष को रिपोर्ट देंगे।

भारतीय सेक्शन शिविर वाराणसी

क्र29 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2023 तकह

थीम– आत्म ज्ञान की राह य्द वे ऑफ सेल्फ नॉलेजह

स्संदर्भ ग्रन्थ – ''द वे ऑफ सेल्फ नॉलेज'', लेखक – राधा बर्नियरह

''आत्म ज्ञान की राह'' मुख्य विचार बिन्दु पर एक तीन दिवसीय अध्ययन शिविर का आयोजन दि0 29 से 31 अक्टूबर 2023 की अवधि में भारतीय सेक्शन मुख्यालय, वाराणसी में किया जा रहा है। इसे बन्धु एन.सी. कृष्णा, राष्ट्रीय वक्ता, भारतीय सेक्शन करेंगे।

सदस्यों से अनुरोध है कि आवास व्यवस्था पर आधारित, समुचित धन राशि का 1 अक्टूबर 2023 तक भुगतान कर दें। पंजीकरण 1 अगस्त से प्रारम्भ होगा।

1. सूर्याश्रम – रु0 1800/– स्रु0 200/– प्रति दिन आवास व्यवस्था, रु0 200/– भोजन व्यवस्थाह
2. अन्य कमरे – रु0 1400/– स्रु0 100/– प्रति दिन आवास व्यवस्था, रु0 200/– भोजन व्यवस्थाह

उपर्युक्त धन राशि में पंजीकरण शुल्क रु0 200/–, आवास व्यवस्था और भोजन व्यवस्था सम्मिलित है।

आवास व्यवस्था दि0 28 अक्टूबर मध्याफ्न से 1 नवम्बर 11 एएम तक रहेगी। 28 अक्टूबर को मध्याफ्न भोजन और रात्रि भोजन उपलब्ध कराया जायेगा और 1 नवम्बर को प्रातः जलपान। सूर्याश्रम या अन्य कमरों में आवास 54 व्यक्तियों को 'पहले आओ, पहले पाओ' की वरीयता के आधार पर वितरित होंगे। वे प्रतिभागी जो इस अवधि के बाद रुकना चाहते हैं उन्हें आवास और भोजन व्यवस्था के लिये अतिरिक्त चार्जेज देंने होंगे।

दि0 15 अक्टूबर तक पंजीकरण निरस्त कराया जा सकेगा। इस अवधि तक पंजीकरण शुल्क रु0 200/– काट कर शेष धन 15 नवम्बर 2023 के बाद वापस भेज दिया जायेगा।

वाराणसी के सदस्यों के लिये, जो आवास और भोजन व्यवस्था नहीं चाहते हैं, उनसे बिना भोजन व्यवस्था के केवल रु0 200/– पंजीकरण शुल्क लिया जायेगा। भोजन व्यवस्था चाहिये तो रु0 200/– प्रति दिन की दर से भोजन मिलेगा। भुगतान बैंक आफ बरोडा, लुक्सा रोड शाखा, वाराणसी, खाता सं0 28600100018425, आईएफएससी कोड BARB0LUXABS भुगतान इंडियन सेक्शन, द थियॉसफिकल सोसाइटी के नाम पर करें। आईएफएससी कोड में जो रेखांकित अक्षर

सदस्यों गण भुगतान करने के बाद श्री ए.एन. सिंह, एकाउन्टेंट, भारतीय सेक्शन, थिऑसफिकल सोसाइटी, वाराणसी को ई मेल theosophyvns@gmail.com पर या टेलीफोन सं0 9935395712 पर अपना नाम, पता, प्रेषित की गयी धन राशि, तिथि, भुगतान का प्रकार सूचित कर दें, अन्यथा आपका नाम पंजीकृत नहीं होगा। किसी स्पष्टीकरण के लिये बन्धु प्रदीप महापात्रा, कॉन्फरेंस अधिकारी को टेलीफोन सं0 9437697429 या ईमेल peekem0277@gmail.com पर सम्पर्क करें।

प्रदीप एच. गोहिल
अध्यक्ष
इण्डियन सेक्शन टी.एस. वाराणसी

भारतीय सेक्शन अध्ययन कैंप

वाराणसी –2023

पंजीकरण फॉर्म

नाम .....डिप्लोमा सं0.....
जन्म तिथि.....लॉज का नाम.....
फेडरेशन.....
पता.....
मोबाइल नं0.....ई मेल.....
भुगतान का प्रकार.....भेजी गयी धन राशि.....
भुगतान की तिथि.....
पहुंचने की तिथि और समय .....
प्रस्थान की तिथि और समय.....
हस्ताक्षर.....
विशेष प्रार्थना यदि कोई हो.....

प्रदीप महापात्रा
कैंप आफीसर
टेलीफोन सं0 9437697429